

**THE INSTITUTE FOR
ADVANCED STUDIES
OF WORLD RELIGIONS**

**FILM—STRIP NO.
MBB—1972—70—29**

**BUDDHIST SANSKRIT
MANUSCRIPTS**

IASER

MICROFILM PROJECT MBB 11

MAB-1972-70

1. Film strip number

13
2. Source

UPASAMPADĀVIDHI

3. Title

4. Additional title, shortened forms of title etc.

N.S. + 980 = A.D.

5. Year in which MS was copied
(Nepali Samvat and Christian Era)

6. Name of scribe

NEPALI PAPER

7. Material (Palm leaf, etc.)

ANCIENT NEWARI

8. Script

24 cm x 3 cm

9. Size

5
10. Lines to a page

65

11. Number of leaves in complete work

1, 2, 3, 22, 23, 45-53

12. Missing leaves

x
13. Author and Date of composition
(if given)

x
14. Number of Chapters

Rules and disciplines for monks.

15. Remarks

Nov. 13, 1972
Date Photographed

नोत्था न्नव वलानां भूषा नोर्णा दय वान्नादिर्क ॥ स भयं क ॥ यच्छ्रुत्वा ॥ इति ॥ निष्कालां भिषकावा विषका मद्रुग वा विषका
 दीर्घा विषका विमि ॥ जलु म्मादि नो पृथ्वी ॥
 निष्काला नो व भूषा ॥ यना ॥ निष्काला नो
 म्मा भीलला नाला ग नो ग ॥ निष्काला
 यो व भूषा नाला भूषा ॥ र्क य न्मा नो म
 ग ॥ सोपा यार्षी नद ले म्मा द नो ॥ इद म्मा द वि वि ॥ १ ॥
 मा म्मा इय न ॥ ग भा इ सो नो ॥ १ ॥ ग द न म न्मा नो र न य ॥
 ॥ म्मा क न य ॥ र्क य नो म्मा क न य ॥ र्क य नो म्मा क न य ॥
 ग ॥ यो क न म्मा क न य ॥ र्क य नो म्मा क न य ॥ र्क य नो म्मा क न य ॥
 नो ल्मा ग म्मा क न य ॥ र्क य नो म्मा क न य ॥ र्क य नो म्मा क न य ॥
 ॥ नो न व लो क नि श्रय ॥ नि श्रि न ॥ क न य ॥ र्क य नो म्मा क न य ॥
 ३

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

काहिसुखा॥ ध्यायेताजधामक लीसहगम ह भयानिवन
तद्युगाहिरुक्कयुदहयागिभेभूकविहृन
भन॥ वनदानेखिभय भेववहयाधिमस
यि॥ नभयगगम॥ ४ ॥ मासिधधुकि
नानाधिवगविरुमसुद्धाकनाप्रपके
नलीधनानाधिवगिदिनीधनवध्यान
नदयलेमनाधिवगिदिहगा॥ कदधमवधनभनी
कायसकनानवहनामासावपयवा

न्यावज्ञागधनवकीनेधयाग॥ माभीवीकवनेनाप
मासागनामोनेगज्ञनपयवावेकी॥ नानाधिवध
वक्रधमपमैयानयधुन॥ उपदनादकाधना
रुहिलनीधधुवजभधुनपधवाधधुनधुन
लानावनसमीधनानवनेधधुनधुनधुन
नदयलेमनाधिवगिदिहगा॥ कदधमवधनभनी

धनक्रापादिहैकर्मक्षमदायान्नभा॥क॥
पक्षदभवर्षासीनिष्टवक्रास्यस्यैकान
कवर्षस्रवक्रास्यस्यैकान्नभा॥नैकमनु
पुवक्रायास्यैकान्नभा॥नैकमनु
यथगा॥नासो नमादि॥नान्नभा॥
कस्यादिनैकैसिद्धयस्यैकस्यावह
नन्ता॥जीवक

॥क॥
पुष्टं ग॥ना न स मन्त्रका का नये न सम
॥ध॥
पादयक॥नैक
यदययैक॥
॥क॥

[illegible]

यवन्तं यदि यन्मात्रं निजि किं कोर्दं दधी भू॥ यासादि कल्लयुं ज्ञाय निभुञ्ज शायसंयदा ॥ आश्मन्नास्येनाभि
मवेसं वृद्धं न युहाननं ॥ सग्रायगवसमा
दधकं ॥ इध्वागो ध्वजवच्चकः न नथकावचः
नोदधः दानिके धादिके धादिके धादिके
धकाः द्याधिनोदधं निनागवास्तु नोभिध
उधकाः कोराम ध्वसक धक नको भूय नम
जास्व ध्व न्ना लानि विर्गो ॥ यासाः कोवध्वं द्याः काश्च यकाः काश्च यानकान् ॥ दहिनासाश्च नासाः योदधिमक

[illegible][illegible]

रुदनावनस्य कनया एवेकमानना कनसी॥ अदिना नरास्य नैरुमा विहराक नदाना॥ अदिनोषमयसं
वरुना॥ गदवमोयसो रिङ्ग म्मनसि॥ क
रुना॥ कद्रफ नीलमृदिगानान एमीय
क्रियन एव गिविधाना॥ अमनलो गिभिर्क
नीयारु॥ कनय खेन नननवा॥ कथुय
सी॥ रुदनुमद विवा निधमयुक्त॥ नि
मालाकारुदनेकनसी॥ अनामयस्तयथसी वन एमदिह जावद हगु कनसी॥ रुदकजनत्या लोभाह
२

नानेत्येवार्थाजलस्याभावेन॥भीमनस्यशब्दः॥
नो॥नामोवगपुत्रोऽहंकिंकोकानधी॥निध
पुच्छग॥बन्धुपालेभ्योमदवैरुपनी॥मस
शुक्ल॥वाभिकी॥नृपयनिकमेकनधी॥नि
५॥याहियात्ययस्यनम्राष्टयवक्रुद्धावर्कन
नद्यान॥ना॥०॥हुकिंकरथा॥हमेद्रुगाकुंवा
नसुपुष्कलायिदीकभीकश॥स्यदाधका

स्त्रयविशेग॥यासादिक॥॥सर्वद्वर्गो॥॥सर्वज्ञानेन॥नाप
पाथनस्यत्यपागहनाननसुगममर्शिरुक्ता॥नेरुनोरवे
वशावकुहिराशा॥नामदसुप्रयवभदद्यान॥भादीवरा
चक्रनयनो॥दीपनक्रशानर्गे॥नदककासु॥मनयमृद्व
निरुनत्रयनर्मनो॥कनसकावच्छनमद॥॥गमाय
निरुपोयधमसुर्गो॥सर्वज्ञवर्ज॥सुविदि॥॥॥मर्वनयक
नसुपुष्कलायिदीकभीकश॥॥सर्वद्वर्गो॥॥सर्वज्ञानेन॥नाप

धिक्खेत्ताविजयधरा ॥ सुहृदि विभावर्त्तनी ॥ आधक ह्येतावत्तमनी ॥ शिष्यद्वयक फलनमर्क ॥ नेकदीपवः
 यानिकर्मक्षेत्रा ॥ निजकायस्यैषधन
 ॥ नसिद्धसमः शुभमनसमनया ॥ नक्षत्रा
 ॥ माहयिहनाध्याधिवेकानयि ॥ समर्त
 खलाननकाख्य ॥ अथान्नकजल ॥
 द्विजस्यविचक्षण ॥ ज्ञायादध्याधिका
 र्क ॥ शिवायिचक्षुगच्छयधर्निर्का ॥ निपदकव नयाधेय कालधरा ॥ सुनमस्येयनापीमधी ॥ काले

रूकनीयस्य धानयस्य ॥ जयमस्तु लोकस्थानयागानिराधयान् ॥ धाधिवरु यजुक्कस्ययाहि न लोकस्थया ॥ य
दीमानगस्थ ॥ एवदि सगन्धयावीर्जन
वादि काच्छयग ॥ वधस्य यज्यया
रुतरथ ॥ याजयाया निरुक्ती ॥ ना
नयग ॥ नयवमा ॥ नरसमस्तथादि कं द
नसवा नयने इय कृता ॥ ना न्या दुयुनि
यत् ॥ ना तु ये यथे ॥ न यद न्क वना ॥ न सि नि क्रियता ॥ मो ल क स्या त दं र्व क म र्था ॥ त कि द्द गो दि

॥ गदु न्य क्क म ॥ न व र्त्त स्या यजु कः स्या ग ॥ न ऊ न य द
ज क न ॥ य ज्ञा ऊ य द स्या वै ॥ ना धि व ग ॥ या र्त्त क र्व थः
या ना ज निः स र्त्त य जि क्रि य ता ॥ ना भ न र्त्त का भ थ
या ता ॥ न तु म द न ध र्म भ थ म र्त्त भ ध नि मा द थ ग
ध म थ ता ॥ ना नि र्त्त र क म र्त्त य कृ ता ॥ न धि वा म्भ य
॥ ॥

राजयनिगासथार्जयनभनहिः॥ वकावकावका
नहिधयिधनस्य॥ लभनमस्यका न्नाः
नयनः॥ यगिकिर्कसुविकायांनयन
थकसुविकासपादयेवकाका लाहला
कान्निनियथमययुञ्जग॥ अविमिन्ना
मस्य॥ सनाया सान्ना नभकाकययक
सिद्धयवावदम॥ नयगिर्दसुनक्षमय

रागा मयस्य॥ वक्रवा॥ निष्कस्यहनमयमया॥ स
विकायावक्रासाधः॥ नहुभिस्तयनी॥ नीनमस्य
निदसुन॥ कक्रास्यनयनमालयनर्कदक्रा॥ यु
निस्तयथका॥ कानयधनो॥ ननस्याला लयन
नर्वदः॥ धनिदुः॥ दीकायासयकथनमनका
दानी॥ वक्रनिवयायिदयन॥ लवमिदस्यिद्या
नानिदुधयवववनी॥ यनिगुधयधशा॥ उय

मयथ नमः॥ कर्म नरहि का म॥ हिन्दु शिवा दसा धम उज्जरु मिथ्य दयसा मिश॥ सा ध्यादि का की॥ नि कार
 शिवा नि का म क द नि का हिः॥ यु की नि या
 सा सा धन न न वि के न वा॥ य म् य न के म्
 से न न भि न मु न म् न न य सा न्द्र के म्
 य के भि वि न क्र भ म् क्रि उ न न का या न
 न म य सा य न॥ न के य के॥ क य न क
 दा ट न न क म्॥ ध न द म सा॥ न ना व रु द न म पा नो वि धू म्॥ द न रु र म रि का व दि ले ध न॥ धि र

धमकनरागमयनवादिनाकास्यन्तभगवत्पुत्रगानधमस्यहा॥
द्विजयदिनाकर्मर्याहमावास्तुगलुलायाभनवकीन
दिनल्लाधमविनी॥जममयेभ्यलोभनवावमधमदीय
संपदकनावकिंनिर्मायानिमोभाभयईसाभनक
धम॥एनादस्यपनिदेजभनमल्लगीवलागध्यापसई
उद्वनागदककवीववर्वधल्लरावावगधमदिना
दि०सोमभ्यवधन॥दनेभायविवाभनमकाभन
हृदयययहधमिहमयेयगदिल्लाक्रेति॥नगदिसिनिहयायाभाभयगभापसल्लनमभजयनाभयभग॥

नयद निष्ठया राव रुद धारव धनागि नय दयग शुभा ॥ आग ग निम न्न व ऊन य वी पय नो धा र्द्धि मा स दय ॥
न ॥ व रु क भय स्य य कय नि स न ह नै य
ह न ॥ ना न व लो क न जा नी य न वि क र्म
निष्ठया र्द्ध स्या निष्ठि न स्या वा स ॥ आ य क
कादि गो र्व रु गो य नि वा निष्ठ य र्ग र्ग को न
ग ॥ नि दार व न ना य शुभ ग न स्य क र्म यो नै र्
शु ह न य वि वा धो न या द क र्मे य न्या दि ना स्य रा र्द्धि म न्न व व ग ॥ य यो धा रा र्द्धि यो सि र्था म र्शो य द न र्शो

इयत्तभी क न एभयय आश्रिहूसायाकृनिमिहूसाक्रमनी कृमयग॥ ना नरुमवसादयग॥ नादसुनकभग॥
नानदस्यक्रमग॥ निरकासनमकनगी
इकनक्रेभमनही नसाउयमयग॥ यि
निश्चनोहवग॥ नविषीकसन्वर्किनकि
मरुयगदनेकावृयिहूनी॥ उरुय
एमसावायकादकृदीनीयहृणावृकी
लविमकृनसलेयुनकाठिकेकश्यादि॥ नासमहि

नरुमवसादयग॥ नादसुनकभग॥
यगायीलेयनाग॥ यनिश्चवनाकहि कदमामाने
कृष्यन्यकयानेरकाना॥ उयसमुनेसव॥ नवि
याकावेकयाने॥ यनिश्चगाययीविनेमास्यस्य॥ व
जावकिर्साय॥ नायशायसोनेवृकृसाकेयस्यवा॥ यम
ग॥ आचीरुकाकनायसववेमभिक्कए॥ तायका
नरुमवसादयग॥ नादसुनकभग॥

गोयकसंज्ञावर्त्य॥ लिङ्गमस्यान्वेतिहेतुना॥ उपसृपयश्चिह्नानिनेत्रेथनिर्की॥ सद्योस्यार्था॥ कलाभजाधुनकादुः
विदलक्ष्यनसावनस्यागीक्रोतायेद्युक्तिः॥
यस्यन्मास॥ नायक्रत्योदिनवमूषमर्थनाः
नयगा॥ नाविशद्युः॥ नेदवनभगतकड
व॥ नेनोदनस्यागोपिसंयहि नवाडकं
नादने॥ ग॥ स्वधनिष्ठिगतयवियेयनास्त्र
जलादुकोदकदनकाद्वयनावर्ती॥ मद्योनसमवलोकाधीवर्ती॥ पिपस्थापनास्येनमनसिकनर्दी॥ यज्ञः

निर्देद नैषि ह्युया नि क भ्रष्टाव क स्य च मय आऊ नैश्च गे ॥ यदि निजाव सत्यापि ॥ सापि चस्य स्व ॥ सा र्धं च द भिरुचि
उपनिवत्तस्य दहा ॥ विवनाभोपदनागिरि ॥

गनस्यायनागनी ॥ नात्ताक्ष सो नव्वज्याग ॥

॥ वायननस्य ॥ दिव्याश्चिद्वनायाभाषा ॥

यनी ॥ स्थानि निवत्तनाप ॥ निवत्तनाप ॥

अननरुखानपाद ॥ वैनयुसिगरना ॥

वैन ॥ क ल्याकीकन ॥ ल्यासिनिपापादनप्रश्चक ॥ ल्याच्यद क का क्षायरीतना ॥ ल्यापि ॥ चैवम ॥ द ॥ म ॥ म ॥ क ॥ का ॥ का ॥ ट ॥ ने ॥ ना ॥ य

युशीनस्यस्येयदि सनने ॥ अस्तसचयगस्यापदने ॥ वन
उदक स्यनकपदनी ॥ पा नोवनी ॥ रुक ॥ नात्तादि निर्मोदन
दकायपनय ॥ पा कयनाले नगना ॥ वरुनी ॥ दयनासिनप्र ॥ १७
पापादकासि स्यनक ॥ रिह्मव नादनी ॥ नयानस्य चनी ॥ अस्मि
द ॥ ल्यानामूर्फ ॥ य ॥ ग ॥ लीनसचीक ॥ अस्तमर्ग ॥ य ॥ द ॥ स ॥ व ॥ क ॥

[illegible]

शुभना। यन्नावास्तदवस्तुयदि शुभं दृष्ट्वाये॥ अत्र कार्यं न्द्विगता॥ कुगदीक्रीडा नीलान्मुगदीवनाईधमवतस्तु॥
संयत्तगस्तुवेनहवन्निगभगदीगमहस्तु
इदंगलायाभाभंवास्तुवशभमप्यनया
वशुशु॥ पाथ्यकदा नवगगहस्तुवस्तु
नस्तुन्नवशुजयावायेभस्तुवशभम॥ इ
मस्तुववगस्तुयनिवेधननववकाश
विस्तोवा नभ्यावावहिस्तुदृष्ट्वास्तुयनिव
कीनवभ्यागान्कुशस्तुवक्तवादिनामा नवशुभ्यनारव

कथं कथयिष्ये ॥ शि क्रमानोर्त्वं नामासि यामय नमैर्धर्वा ॥ निःश्रि गथाभव ॥ अमर्शादिने का लदिरु ॥ शी लये
न न ना एव धर्म च न धर्य का ले ॥ इद
धमय स भू ट ज्ञा मा दि ॥ न ये न भ
या वि ग र्था ॥ य क्त्वं भव न म् ॥ निःश्रय म
ना ॥ य न ना य श्रम ने कु न का न ना भ ॥ कु न
ना ॥ स य पु न वि धा ॥ न मि ह को ॥ नि नि न
यु व क्त व स्त ग न म् ॥ ना म न य ग नि को ह न को न व क भ ॥ स य न म् क्त र्ध ॥ नू द गी य स्त्री य नि वृ क्षे य ॥ ऊ

नस्य॥ नस्यरवनाथावसिदि॥ ४४५ ॥ यमनीरुक्कभा॥ ४४६ ॥ अमुनाया
 ध्मयकागार्थिनादगह्मनायसमा नोदस्य॥ नोभा
 नाभाभा नोक्रवसे॥ नसस्यस्यगमान॥ नाभाभिनिककीभि
 ननीमिहविदययानस्यधगावगसिहृयकस्य॥ ४४७ ॥
 मया ध्मयस्य अमुना नाथिकी स्यात् ॥ ४४८ ॥ जिह्वनेष्टा
 जिह्ववदययस्य अनेना नो नो नोयका नो अभा क्रियल
 कलादीया कनाजाभाभायक नरवसमभूत्यावयकनमनि
 द्योहिनागुत्याका॥ कवोसिदि ॥ ४४९ ॥ वदस्यसिना नो छिनेय
 अनेक्रवकिमिहविदयो नो नो निनेगहिक्कभाभीलि

2

[illegible]

नवदुग्धगारा ॥ अरु सीको गिगा न सुय कल द सु कामय विरु ॥ ३ ॥ स्वकृपाया स वा ॥ वनि निघाय म क र
॥ ना न क न क्रिय न गा या ॥ ना न क क दि द वा
घा न य नि द वृ न सु र्ती ॥ अ न क्रि ग र्ती रि
या न रु यि क वि र डी ॥ न य ग कि या क
या नि व स ग ॥ अ न य र्ही र वा स म व सि ॥
न र्ध व र्नी ॥ अ व र्ही व ॥ ग य का ला र म न य
सा क ॥ नि क्रि य र्ही व र्ही र का न व य व र्ही ॥

॥ ३ ॥ स्वकृपाया स वा ॥ वनि निघाय म क र
या र्ही द र्ही ॥ अ मि स म व क म ग ॥ मि अ म क य ॥ व क
रु र्ही ॥ अ वि ग ल म र्ही नि व र न म ॥ अ र म न व र्ही
अ ग म र्ही य र्ही म ग ॥ न य ग म न र्ही र वा र्ही य म र
क र्ही व म ॥ अ म र्ही र म ॥ मि क र्ही वा ॥ क र्ही म व य र्ही म र्ही
॥ अ र्ही र न र्ही व र्ही र वा र्ही क र्ही व र्ही र वा र्ही य म ॥ ॥ य
॥ अ र्ही र न र्ही व र्ही र वा र्ही क र्ही व र्ही र वा र्ही य म ॥ ॥ य

नानमधरादिः ॥ वधार्गिरु सविदे लभति का नारा ॥ वमपद ८ ॥ यस्माव कनवासा ॥ नरा न राय विरु गा न द न क ॥
युयभरायाया द सुभाभन न्म कि नृगा का
दि नो ध र म स्या स्या य का सः अयु म न न द
न न य वः ह ल क य य के न स्या नि सी म भ न
स्य स्य व न य भ न नो भ नो यि य न की म य भ न
स्य स्य व न न स्य य ति का य म ॥ ८ ॥ दू यः ॥
विद्यु द ध भः ॥ ग द न्म का व न न न द न सि सु दि रं य न न क वि र स न स र्व हो र व न स र्का व न नी ह्यु ॥ ९ ॥ अ न

दि ग र्व ध दि ग ज या र क नि गि वि का दि ग ग ॥ न न र्ध
स न ॥ य दि ग स्य म ध ग स्य वा स्य सी र न ग स्य ॥ य र्का न र्ध न
क न र्धः ॥ भि र सि दि न ध स्य ॥ य ध क र ग यः ॥ ग य ग ॥
न र्ध स र्मा य र्ज न ॥ अ नो स्य दि नो यि का य दि र्ध स्य ॥ स
या क र सी म र्ध न र्का ॥ य र्ध वि का यः ॥ वि र्ध सी दि र्का स्य
२१

ना र्याभिः सारनमको नापसुहो ॥ प्रवमननाकदयसावगादीनिनेदु न्नायकमयवभगका सेतगयानेसा ॥
नावरुमलुगलायकु कुरुयकी ॥ प्रनोभमि
नधमि ॥ प्रनोदकागिहकमह्युकिभ्यामनि
नयनकनोकेषुसुसह्यननेनिवा नोह
यवनो ॥ रमिउरु शोभ्यानेअयगसालेस
नामप्रयगालेयनसा ॥ प्रसयागलं ॥ प्रना
लस्यालुसयासादमले ॥ नमकेचादीयाभिहकमधी ॥ नसाव ॥ नामकेनोनागिहकमयका ॥ नासदीगिहकमभ

॥ प्रविद्यनासासिगायीगी नानेनसा ॥ गमयादिकिनेग
यादिः ॥ स्वकर्माकसागदरवयुधिकगनसाकदुभः
या ॥ लविनोभसागदरवमयहजीभयकिददुभनकेनि
गिहः ॥ जयाविवादननाऊकनवग ॥ प्रकदुभनोनिः
भयमनविश्वकयादिरुसाहुलेकगो ॥ योभनो ॥ दान
॥

सय भू नय भग ॥ आन क क लय नै सि क्त न न क स्या ॥ समे द न य न्व ग ह का स्या ॥ नि वा न भ ग न ॥ आ ल नै य भि क्त य ॥
 ग य ॥ वि क्त क नै स न स वे ॥ छ र्छ ने मा य
 ल स य भि य दि न स्या ॥ नि भ य भ य ग भि ॥ स र्व व
 य भि वा ल द द न ग ह स ध र्म स ॥ न नै ह
 ह नो य ॥ दि ल द भ य भ य वा ॥ अ न वि क्त
 वि भ य क ग र्भ क्त ग ॥ ल न भ द न स्या ह न स्या
 ल भ य द ल न ॥ य क्ति य भि क्त र्म य स वृ द्धा वा न स र् वि क्त य ॥ न द भ नि नै कि यी स न ॥ ना य र ह भो क्त न भि वि न

२६

नानाधराप्रयविचानिक ह्यास्यदधर्मासयगनयत्रादिगर्दीयावनाथानयदधर्मेना॥ अत्र नम ऊ चानि नयमि सफहे
निकयामयनिवत्तनी॥ नानवह्ल नाह्ल ननै
यनिशर ननह्ल गीइ चोनक र्थेनचोक्र योम
मह्ल ननस ॥ अकं यापचोवन सारुट नोपि
स्कोनविमिश्रग ॥ नानननेषा विमिश्र त्वे भव
यापनिमार्नयागोक्रास्यरुमि ॥ नानुगावह को
हादकोवाइकागमनयनदीयधामरवकनही ॥ अमनस नयानेनवत्वेनापक्रियनास्यारि क्रोधाभिस नर्याभ
गर्दीयधर्माचवग ॥ अदकागानया नाजयक विरुध ॥ ननदी
नचोक्रार्म विमोचयग ॥ यावर्गने धर्मदहनया ॥ अयाव
दही ॥ नानाधर्माकवनायाट नु नुसुमि नयनराउ नयुस्य
रुचयापानिगुहर्वेपुक्षणा स्यामनही ॥ अत्र नमवक निपन्नो
याग ॥ नरद्वयंरु ह्नु क्रालयवा ॥ यमिभजन नमवा दक्रका
न

रत्नादानया नानाश्रिकं क्रुद्रकगर्भम् ॥ गङ्गाकविचक्रुर्ध्वमावकाशम् ॥ निदलनीये कर्तव्यं च न पश्चात्तथा योयस्य ॥
यथासावित्री गिरिवर्तनया ॥ हिरण्यमोक्ष
कनकाभयस्य मन्दलेन ॥ नानावर्तनोत्तम
पद्मजालजम् ॥ निर्धाय नवरात्रासौ ॥ विना
सुन्दरम् ॥ एकवदनम् ॥ पञ्चकानिकम् ॥
सुन्दरम् ॥ नोपशान्तम् ॥ दायने केन भोज्यम् ॥
विगायन्तम् ॥ यानि ॥ यथा ॥ वानेन यथा ॥ नव
नव ॥ निदलनीये कर्तव्यं च न पश्चात्तथा योयस्य ॥
यथासावित्री गिरिवर्तनया ॥ हिरण्यमोक्ष
कनकाभयस्य मन्दलेन ॥ नानावर्तनोत्तम
पद्मजालजम् ॥ निर्धाय नवरात्रासौ ॥ विना
सुन्दरम् ॥ एकवदनम् ॥ पञ्चकानिकम् ॥
सुन्दरम् ॥ नोपशान्तम् ॥ दायने केन भोज्यम् ॥
विगायन्तम् ॥ यानि ॥ यथा ॥ वानेन यथा ॥ नव
नव ॥ निदलनीये कर्तव्यं च न पश्चात्तथा योयस्य ॥

शांतिः ॥ सुना क वनि निदि कः ॥ निष्ठा रि नरु न्ना नभ ॥ ग द द र न्ना न्ने व गी धनी ॥ अ य ला य भ यो व स्य ग न य द
ग न स वा य र्व य ॥ य र्ग म क्ता यो यो य ॥ धि
वा ॥ अ य ग म य लो य यो वि व क का यो नि रु य
व न न य य र्ग य ॥ द न र्ना य र्व य य ॥
ना का भ म्मा ॥ इ र्ग र्ग यो ॥ नि र्ग य र्व य य
भ म्मा ॥ न क न र यो य य र्ग न ॥ य धि व य य र्ग
ग य व न र्व य ॥ ना यो य य ॥ ग व र्ग न ॥ य र्ग य
न ॥ ना यो य य ॥ न क न र यो य य र्ग न ॥ य धि व य य र्ग
ग य व न र्व य ॥ ना यो य य ॥ ग व र्ग न ॥ य र्ग य

इह न नृपस्य॥ नैकश्रुत्वा प्रजानां तदा नृपस्य सीरिर्गणैश्च लोकाद नोरिर्सीरि गस्याप्यजगत्॥ नृप सीर्याप्यजगुर्लोकागस्तथा
दिगीवावस्तुभामन्यदा न॥ सदा विद्यालम्ब
श्चाप्यहो॥ राजानो नृपयाने न नृपगाभ्यनसि
हजगृहि न॥ मोहयिह स्यात्पुनरिह यथा
(६॥) आदिशोपादयानं यानं सर्वकलो॥ वरु
॥ कक्षाधद नृपकमस्यसमासे रज्याय काय
॥ नानाधर्मकामं कृत्वा मनिमं क्षिण गजानं॥ गमनं न्यायक स्थि॥ न स्युर्ध्वा न क्षाया गच्छुः पार्श्वे॥ निनायुर्ध्वं सिमि॥

[illegible]

मायां द्रुगं । अक नशीयत्वं विरुना क नशीयक नक्षम नूनं ।
 यागमभिरिदः कायगस्तत्त्वमक्षसमाधय नोर्तां वि
 नय नुक्क वक्ष्यन्मनुयथागमसमी ॥ यादनस्त ॥ जना
 वक्ष्यदीनां । अन्मस्तस्यानस्तुन ॥ स्मिद्यन्वयमस्तु क त्वेयः ।
 विच्छन्नोत्तपदस्यां ॥ स्तुताननरिर्मंदिगस्तमास्तुग
 ॥ त्वन्मोक्षान्नक्षयक नक्षिदाम्नीमिवाकः । अन्मवा
 यस्तवधनं वाग ॥ वैश्वर्यं त्वन्मिगन्निक्तानामज्ञानेनैव ॥

आदिना न॥ बुद्ध बुद्धा नानि सद्यस्तानादि क्रमं॥ पूर्वजा धेय न स्या॥ अग्रे धाम न क्षम्यहि न का मगत्या॥ श्रेय भक्त
 ध्या नस्तस्य॥ ना सत्य सा वा न क्रय सदा र्था
 नियक्ता र्था सुभा ग क्रय॥ सुय नयि स मत्त
 यत्त न मया य न॥ क्रयार्ह न्न नय न्ना ह्ये
 सद्यदस्य सक कर्मा॥ क्षमय न क्रय र्था॥ न हि
 रक्षि क्ता न॥ अर्था क्ति या क मा वा स मर्क म
 न॥ अ गि रा न॥ अ य व क्रमो॥ का र्त्तव्यं यत्तु म न मा दा य॥ व ध या नो ज यि क वि र्त्त न॥
 ॥ इति धर्म दर्शनं ॥

दा क्रि॥ य नाययधत्व न भक्षमा वि लयपस न्वा न रि स त्वा न स स्या ॥ नाय स त्वा कृ य आ क र्था ग ॥ ए त्वा वि श्र म्भि ॥ ना र्क्ष
 य न म र्क्ष न स्या क य नि ह्ना नि य वि क्ष न न ॥
 य स्या ॥ स सु च न व ॥ न दू गो क न र्क्ष स्या ज ग त्व
 दि क र्क्ष ज्ञा ॥ धा व दि ग व र्मा य द न र्क्ष स्या जि य
 व न वि वा स न ॥ य दि स द न्का ॥ दि ग्नु या न भ
 शो क न र्क्ष वि ग्नु स ए म् वि क र्क्ष ॥ ए क्क्ष न भ
 ॥ स मा क र्क्ष न र्क्ष ना म ॥ स मा क ॥ न पा नो क यी क नि ॥ अ र्क्ष व व स य भू ॥ अ क्क्ष न र्क्ष ग त्व ग न र्क्ष ॥ भा व न ॥ र्क्ष र्क्ष न ॥

शुक्रस्य॥आध॥अविशेषवृत्तस्यविद्यावीजस्यवधमीमोक्षारिणानी॥सुखनेने॥आयुः॥अमृतं॥जातस्य॥वा॥अनाः
 दिसन्नेस॥अना॥सि॥शनदीयेका॥वा॥विनाः
 वसन्मं॥धय॥नृ॥वै॥अ॥ना॥गी॥ग॥स्य॥
 नृ॥रु॥य॥नृ॥ग॥॥अ॥का॥श॥क॥टि॥वा॥न॥न॥स्य॥य
 अ॥शि॥नि॥रु॥गि॥म॥ध॥य॥नृ॥ग॥वा॥स॥य॥रु॥॥
 शु॥या॥ग॥॥द॥ने॥नृ॥क॥पी॥ध॥न॥न॥न॥अ॥ग॥वा
 लोकं॥शु॥य॥नृ॥अ॥स्य॥ध॥न॥नृ॥नृ॥॥सु॥न॥ग॥रु॥ध॥मि॥वि॥॥मा॥व॥न॥वि॥ज॥नृ॥॥
 ॥अ॥वि॥स्य॥मा॥न॥य॥ग॥स॥म॥न॥न॥न॥वि॥ज॥नृ॥

जग॥ नो नरु मा प्रयथा गत्वा न हर्त्तुं निष्ठुथा गमयान् प्रकी
र्याद न॥ नयाये मर्दयति मर्दा तो दा क ज ग स्या॥ कर्म
ध स्या स्याय दि मा रू॥ शिष्य क्ष न भाव न॥ य न
क नि क थाः भि नरु क न् नो सा म गी वा न्क न्
न न क द्वा नू या द र्ज या म रू वा न्क न् न व भाव
रू यी ० वृ मि यी ध म रू न य ट घा टि का घ ट वि
स ध भि वा ॥ वृ ण यी रू न॥ नी यि व न्म सि क्क ग
॥ सं ज्ञा न ग ध रू नो ग म्मा नो ॥ स्त्र या नि श भव म न्नि क र्द ग ॥ स्त्र म्मा नं भव य ग ॥ स्त्र नो या रू व सि म्म र्ध नः ॥ य दि

अकं नापी दा ना प बा धि नि य या ॥ या द ऊं या वा
 मा फं ॥ ॥ सु याः कं ह त्व मि द व द सि नी ष
 वि ह य व य या मा दू मू वी ॥ उ रु व न द य ॥ द म
 याः ॥ ग त्व वू रु म् ॥ न्य न दी या क व ज वि का व
 ना क न म ॥ ज स न मू रा वि न दू री धि ग या
 ल मो ल म् ॥ अ न क व ह्या ना तु ॥ न त्वं य नि
 न क न न व न ना ग म् प य को न नि व ॥ म न स ह्य त स्वा का वः ॥ न द न्ने म न व ॥ ॥ न नु व द्ध स य वी व न म् ॥

व ह् त्वा यो व रु या वा द ॥ ॥ भा व न वि भी न का नि ॥ भा व न स
 घा स्त न या ॥ सं शो क न ना या च ॥ स द म र्था या ॥ अ ध न
 न गृ हि त्वाः य मा सा नि ह्य वि ह् म् ॥ सा नि ह्य का लि का
 र व ॥ ॥ वा दू ल ग म् ॥ वा र व ना धि ह्य व न सि द्ध ॥ अ र्द्ध
 व र व नु यः ॥ न्ना नु य नि म व ना म थ न म् ॥ ति य नि व ल
 का य हु का नि मि ता व ॥ द द व नु य म व य म् ॥ म थ न न रु व
 न क न न व न ना ग म् प य को न नि व ॥ म न स ह्य त स्वा का वः ॥ न द न्ने म न व ॥ ॥ न नु व द्ध स य वी व न म् ॥

३५

अविशिष्टत्वमामलात्कृष्टद्वयवयविकर्षाकिद्रां वलि जलिनियाजनीं॥ मन्त्रकृत् त्वस्य वाजनं न बन्दीः
वनात्कत्रय॥ अनन्यद्वयकृत्कामस्य॥ नरि
शोकलभवामारुह्यद्विहृत्तुगिनीसप्तमय
यी० वदकृष्ण॥ स क्वयावता कृत्तमयालयधु
न॥ निर्दोषानुकम्पयाठुद्विहृत्तुस्यस्यनिष्ठ
त्वत्तुलं॥ अनायक्तिन्नकस्ययादुःखमा
सम्पादने॥ कायसम यत्तु॥ शिष्टयांस्तत्तुकादंस्तुतिर्यथैकिकीस्तुली॥ द० नयादोमादिनास्तुष्टुन॥ नया

[illegible]

मनस्यत्र॥विधिनिमयसिग ॥अन॥अनायकिः॥सुयाभ्येगन्धयक॥गदानेवाजनिर्भनमात्रा॥दक्षिणसंग
 निवरे॥सुयाः॥स्वनायनियान॥कायसक॥
 युयागलं॥३॥कायसंमकः॥मेथनाकी॥या
 यागलं॥अविधिपुल्लवक्या॥कायसुय
 यकि॥रत्ना॥नवाहियाय॥अनयदनिर्भकी
 सुलं॥कासिनिवाद॥यायिकासिनि॥३॥
 विशङ्क॥मयासार्द्ध॥सुयिदिममागमंवाकृविनि॥मेथनाराय॥३॥

विनिनानि॥नेदेवयुह॥३॥नेनमेथननवानयसंन
 यश्वन॥युवाद्द॥रत्नासविस्मयन॥नेनमेथनावाकृदय
 विदु॥अनंनसाकाय॥नराय॥विदयस॥अना
 व॥३॥मेथनाराय॥विदु॥३॥
 क॥कायक॥वाव॥मथमिनि॥विदु॥३॥
 नथदि॥विदु॥३॥

३२

वाकदि॥ददिरुगिनिमर्द॥यशरुगिनिनियच्छामिगकदि॥यशरुगिनीयवगस्तुदि॥यशरुगिनिमनआपनस्तुदि॥
प्रियकदयमिहसमकाकिंकप्रियामिहक
राजनंमंमवेगदिरुकिष्वागदिरुस्तुयगत
प्रियुयउ॥अनगस्मीनयकिष्वागव॥यकः
निगकामि॥मेथनाराषर्ष॥मेथननअन
गदवयस्यवावर्ष॥मनमेथननवानयस
नयस्यननगदथमनयनगायननः॥यशगुदीनदीनयस्यसंयथास्तुमानिवदिगवंगस्तुगनगउउकः॥यवग

हमेरुगिनिप्रिया॥ददिमरुगिनिनियानीर्यश्चकयवाग
कवस्तु॥वात्रिकारुगिनिववस्यन्नाययमानापूवषा ना
त्यावदीषुत्यातानिनदस्तुनाराषर्ष॥मेथनराषर्षनेवि
यविवववस्यवस्तुन॥गदरुद्विनिगमायनार्थवचनं॥
त्तानययागवर्षाउरास्वागस्य॥यविवयासंवक्तनं॥मयाग

युवदना॥ कुन त्वमना॥ त्वस्य मध्यं च रु॥ युधक त्वमनां क प्रणीयतायां॥ नाक ह त्वं न्यास्य क त्वनय याग त्वं॥ न
रु ले क्त न युगि क ह समा क र्च या न स्य सा
म न्य स्या॥ वार्ह नि यि द स म डारु ण स क
न क या क रु क्त न॥ प्र षु त्वं क त्वा दि न त्वं॥ ग
न स्य नि नी कि नि का षि० न नि ष क् ना य नि
न ना॥ प्र षु न क त्वं यु य स्या स्या मा य स्या॥ क स्मा
नि वा कि ना॥ सा च वि षु वि स र्मा॥ सु ह ग क् त्व नि य ता स व न की ज य न गा जू नां सां च त्रि षा॥ वा य द ह य नि षु

यः॥ सु त्वमना ह न स्या॥ स य या षु त्वं ग य साः॥ प्र षु न त्व
न नि मि ला ना॥ अ नू य न नि र्व षा त्वं॥ य व र्ण वा स त्वं
द षी षु द सा षु न षा वि ग त्वं॥ य नि व त्वं न द न न क न
ता वा त्र यु नि निः सु षु त्वा रा र्थ नि षा वि ष त्वं य षु व द षु
द र्थ न यु नि षु नि य न ग द्दु नि षु व षु त्र ग्नु सी न नी य न द

ॐ

नायाम॥ कलदनदात्रने॥ याममकावास्तुयंकीधीरीत्यको॥ प्रकृगंमिथामिनि॥ कचिन्क वनिव॥ सांचनिगप्रह
॥ हृलंदननामममधनना॥ धर्मविधिय
नृस्यानृत्तनादिकत्वा॥ सांचत्रिभुविनी
त्या॥ अगन्तुनियुक्तानियुक्तत्वाः॥ स्वत्वेनि
ग॥ नाकत्वंमज्ञानादयत्न॥ याविगन्तु
१॥ अनेनेवयगतयविगन्तु॥ प्रकाथम॥
दि॥ अडजन्तायवत्वाकादवकासनिधि कावस्तथसन्निः प्रिगवाष्टयवत्त्वमवाग्यामाज्ञानकर्यमावदि

नदीया ग्ना वादयाना वस्तु सत्वमिगियस्थसंख्यमता नि॥ यामा नि काह स्तु ध्वस्तु गग विगलिं ॥ गद्यदिभक सक क
युमाधमनक वगशा नव दधन लं संय माद धि
वाशि कुंदां संस्तु नय गग ॥ अनाय किः कृता ना
वलायाः सद्यार्थ ॥ विदा न संघा व लीयाः ॥ यथा
अनिसु स्तु ॥ योजनिकेन ॥ विद्य कुंदा स्य वा दूक
नयुक्त ॥ या वाकयिक आचन दह स्य रिक्ता र्क स्तु
की ॥ या वन दू कनान नाना कृता क वा ॥ अम न्दु यमू भिग म्या ॥ अका वन म मू वा बा द ध द न्द ॥ अम न्द क संघा व लीयाः

गजनाथुद स्य या वग ॥ स्वय स्य यन वा ग थु यूनिय काना
रय विरुग थाः ॥ य वा ध्व रिम स्तु व लीया ॥ कोटिका संघा
गलं मा व क म्या ॥ गद्य द द नः का न लीया ॥ अन का थ ॥
नम नि वी द यो व ना दू क मि ॥ कटिका विदा न संघा व लीया
स्य थि ॥ अन न्द मू य क व ॥ स्व लं मू य वा द न क स्य रिक्ता र्क
स्य थि ॥ अन न्द मू य क व ॥ स्व लं मू य वा द न क स्य रिक्ता र्क

३४

मनिगमनस्य॥यत्नागलंष्टवर्ह॥४

प्राच्यान्कत्रयविष्टनवाकनमृषा॥अन्यथागीयानाधर्मसंघावसेषा॥सुनमभवनेनेनधर्मसना॥अत्रहृदय
नामः॥नथागनस्यानिकदसुविरुद्धिना
दूकर्म॥अमुनिकनधिकयुक्त॥यत्रयय
नत्रयान्नगति॥निवात्रधवर्द्धक॥यकक
दनस्मान्नस्य॥अनाहूयलंमस्य॥मेषनाह
नाककृत्वस्यरुदसंघस्य॥संघरुदसंघाव
स्यषा॥स्वयवासनाकरुनिसंघा॥मिखाधयनेवाह्यापुय
थायनसंघारुदव॥संसुवनिमन्नाय॥मिखादि
दयकृत्सु॥निवात्रधवर्द्धक॥संसुवनिमन्नाय
दलंवाकस्य॥यथकृमावृद्धधर्मस्य॥यवासनीयवा
यययर्म्मरुवनकर्मधवा॥गदकयनिनिःसु॥यः
॥१॥नन्मादास्ययनियकृतायाः॥अनवरुनसंघावः
॥२॥नन्मादास्ययनियकृतायाः॥अनवरुनसंघावः
॥३॥नन्मादास्ययनियकृतायाः॥अनवरुनसंघावः
॥४॥नन्मादास्ययनियकृतायाः॥अनवरुनसंघावः

॥ वादिन त्वसि कृत्वा धिभात्तमववनि य त्वस्याज सि कृ शि वा जूनः दशः ॥ यो वदन्त्य स द्याव हा वा ॥ सं द्याव हा
वाः समाक ॥ ॥ नाय वः दश ना पुन न्हा
स यार्जि न क म्म स्था य ॥ स्व त्व नः स हिक स
वु आ ख ज या नि य म न स ॥ सी व न्ना दिक न्हा
न्य ज यि न द ह्म नि ज न त्व ॥ स ज्जा गी सा काः
व मा न् ॥ नि ग ह्म न ह्म ह्म ह्म ॥ सा धि क स
व त्व ह्म न्ना न्नु ह्म ह्म ह्म ॥ य वा य वा ॥ वा स मि ॥ नि म ह्म ह्म ह्म ह्म ॥ अ स ह्म ह्म ह्म ह्म ॥ स व

इवमानवृक्षे॥सख्यजनधिसिगडध्रुवसुखनवधननेःसर्जिकं॥निर्दोषनिषदननविषवासः॥नयमीः
लघुहसुत्रनगद्वय॥नवदधोवृष्टिपिपि
लेन॥असंयक्तवृक्षेहसुखनासर्जिकवर्जः
त्रियन्॥नवृक्षे॥ननवक्तव्यगलंगकय
समावासस्यवर्जकादवस्यवर्जसर्जिकावाः
सिक्तकठिनःसर्जिकाविनाशविमर्शः॥अ
प्रममविषवाससर्वग॥सर्जिकागुर्वकलेजः

२३
निर्दोषनिषदननविषवासः॥नयमीः
त्रिनिर्मल॥वमधवमरिच्यस्यगगाकात्रसंयक्तवृक्षः॥यासि
नवजगदेहान॥नानुसर्जिकाटिक्किक्कावाभदयसिर्माटिनी
स्य॥नानयात्रावर्जकासर्जिककसकवाटकल॥सर्जिक
जलाकविगलंगकयस्यस्यसावनादरुसंदर्शितनाः
न्याधिष्ठानमर्जिकावृक्षःनयाक्यसम्प्रवृत्तिविधिः॥
कृत्वाधिकथाः॥अधिष्ठितगलंगसर्वसंदर्शितःकलकल॥सायविवा

वाक् स्मृ नाद न्युत्ति न ह्य ॥ १ ॥ क न म य द म य स्म न यु य क ॥ नि क श य वि गृ हि कृ त वा क न म य द
 नं कृ त ॥ अ वि र क क र्या व ध न ना इ कि उ
 र्ध म ल ह्य ॥ म न म न ला द ॥ स म क ॥ अ ल वि द
 व णः ॥ नो ग क र य ॥ नि म य द वि य र्ग य र्ग
 गु म य व र ॥ अ क व य क न व ण क र न
 य वि र क क र्ज क न ज सा य रु नि जी म न्य व
 य नि का या नि ष य ॥ अ वि र स का व स्म ल ला ह्य ॥ अ वा ॥ नि क व णी य व नि स य ॥ अ नि ना म

यास्तु नययक्तानि कश्चयविग्रहिरुद्रवाकत्रमयादा
 ॥ ॐ ॥ वायु ॥ वाता नामर्ममर्गं द्रुधकस्तु न ह्वं । साधनः
 वा नादुक्तममकस्तु न ह्वं ॥ नतकदवनजधारागस्यय
 कः ॥ ॐ ॥ यवित्रावायामः सामनकन ॥ कश्चयत्रिक्रिफ ॐ
 स्तु न ह्वं मधनावाकाकृष्टस्यान्या नियलयन ॥ वाट
 षयुवित्रावरुस्यधनावा ॥ यनिखायत्रिक्रिफदायध

न नञ्जालिष्ठयावग रुजगस्य संस्तवनं॥ निर्मयादधन्यसि नूगमन नूयस्यैक नूय
न॥ अथ कलंकं कथं नमः॥ यत्र स्या॥ वि
जवधिष्ठानस्य॥ नान्द्रिनेः द्विक॥ सायिक
नीः॥ नान्द्रिधर्मकथाः दृष्टिगोचरस्य नान्द्रि
तयाः॥ वर्जितं लयगग॥ संस्तवनं लय॥ ना
दिकयुक्त॥ अविद्यमानैः सन्निकम॥ अन्तव
सत्त्वान्धिष्ठानिकस्य॥ अन्तव्याप्तिं भद्रानागिकं को॥ अन्तव्रकलं विजानीयस्य वक्तुं दितां॥ सर्ववक्तुं लं

युवासनेः सन्निकविशदं॥ नायायः खलु खलु नायाय
य॥ नावत्यजविद्यवासः॥ नान्द्रिध्विष्ठानादन्तव्रकलं लय
यः॥ नान्द्रिधर्मकथाः दृष्टिगोचरस्य नान्द्रि
यिविद्यानलं भूमस्य लयगगविद्यानलं॥ विद्यवासनेः स
दमस्यायुत्रकयुक्तं भूमान्यु नमान्द्रिधर्मकथाः॥
अन्तव्रकलं विजानीयस्य वक्तुं दितां॥ सर्ववक्तुं लं

ॐ॥ नमः ॥ सा योगिनी त्वं मया स्नेहसा ॥ पृष्ठद्वयेन सा मां संवादी यथा ॥ निवदनं सदा ॥ एक उरु वा सर्म नन
वाससाः ॥ द्विगुणमरुदना ॥ अनियमः
यावदर्थ ॥ अदय त्वमधिकस्य ॥ नेः सज्जिः
ययि यद्वद नय संवा इविरु ॥ यथा सः
संवाद्यां नवयुरु साय न विषय यमवः
कल ॥ अर्जव तुथ मउल कल द्वितीय ॥ रु
विष्णानिकानि ॥ कनिष्ठा सय ॥ रुदिसु मय ॥ अनन्य मध्या नां यमार्ग ॥ अरु वा ससा द्विय क मयिदि

यां सदा त्वमय ॥ दशा लुह लय नी न जा या वा धि कानिः
कल ॥ न न्या य मय दय दनु वत्रिक मरु ला ना
धन्यादि न सा या क म मा या म न्नः सज्जि क कल ॥ रु रुः
जम ॥ अरुः यत्र कल ॥ यथ मय वा वि क रुदिसी यम उल इ न
नीय रुदिय क म उल कल ॥ विषय कानि सव दे के क मा न
नीय रुदिय क म उल कल ॥ विषय कानि सव दे के क मा न

[illegible]

भद्रयः॥दक्षः॥आकाशयनिकस्तककवर्ध॥मासिकनेःसः
 भद्रमद्यदनवमधुतस्य॥अकस्थिकाव॥निद्रनिष्ठानांचम
 नांयत्रिस्तवरीवनाम॥मासिकयुष्ट॥मासिकनेःसदिकं॥एः
 सीरिः॥दुकस्याद्येदानं॥इतिनासकमास्यायिरुस्यामन्यजुनः
 दवग॥लिङ्गतात्त्वयदसुनित्याः॥उरुत्रिंश्या॥अधिविज
 न॥नाकाहनयविहृया॥यद्यभ्यायिरुगीकर्मदः॥द्वगत्वा॥

॥सहस्रवह्निमणिः॥सांघिकंक्रियाकावमनत्रयम्॥जनिःसुवर्णमहागङ्गाकलांसदधन्वद्रयनिर्हनाधमस्यमयधः॥शू
ननिनमस्य॥नवद्वयःसद्यश्चिजाल॥ग्रीष्मा
संघडयनिर्हयाय॥न॥धपनिर्हयस्ययथेसु
स्यकनिककर्कसादिनामिगधवनःस्ययका
मसुसतांघिकानां॥धवननेःसमिधुय॥धवन
॥कयीहिदुःखसायविवर्कं॥रुत्थनरुषि
पुदानसमाय॥सौजायलिकस्य॥उयसंयचमाममयिजया॥विरुधर्मस्यययुवतःस्यययिहानिप्रथमयुक्तम॥

निःसृष्टमानमनित्रकं॥याजजीवत्रमिंयसुनिनकायवन्न
कडिकतेरायानं॥धवननेःसमिकविलम्बं॥नाचात्रयसाव
सः॥इक्ष्वाकृदिनिमिदिकागुरुयाभयधनकेविकलियमनि
नेःसमिकः॥पुनिगुदीयान्निर्हनीदीदांवासः॥यविवर्कनाय
कनावा॥यनिगुद॥विरुक्ता॥जीवत्रस्य॥जनायहिदुःख
विहर्षमस्यययुवतःस्यययिहानिप्रथमयुक्तम॥

३६

यनिगदनेः सन्निक विरुमः ॥ हस्तिदृगं न ह मा ॥ दल नाय वि वा व ग न मा स्यादिः ॥ यथा ग लं म स नि दि न य नि षु ॥ वे भ य
म या ज व ग ल क् ॥ य ठ य द ना यो ग न्दु ॥ ज ना य
क य य ॥ य नि ग द नेः स न्निक ॥ म नू ष्य ग नि माः
दि न न षु द ष्य क मा व दी व व स्या ॥ वि रु य नः
य व नू ष म मा वि रु किः ॥ ज ना य लि न स्य नै
य न्द नेः स न्निक ॥ स व स्या हा ठ धि रु ष्य स्या वि
ठ क ठ रु य म न्द वं स क द्दिकः सा ठ क ॥ लि रु ष्य रु य आ क यू ठ सां या टी नी व स न ॥ य म स्या वि रु य लं ॥ ज न्य रु व स्या ॥ ज नि

लि स्ता व द कानि क वि रु न ॥ वि रु स्या दाना ॥ य नि ग द नेः स न्निक
गु दि द ग ॥ य ष्य नि त्रा य लि रु न ॥ उ रु व र्मिं ष्य य ॥ ज ना
द रु न स्या ॥ मो ल स्या ल ष्य ॥ वा व न स्या ॥ ज न्य न स्या ॥ य द्धि ध स्या
॥ नि रु क द धि क य ष्य वि रु य न ॥ न्य न ल म ज स्ता न स्या व ॥ न ल
रु य ना र्द लं ॥ ज स्या य रु मा ॥ य व गु दि नो ष्य द ष्य रु कः ॥ य
रु य ना र्द लं ॥ ज स्या य रु मा ॥ य व गु दि नो ष्य द ष्य रु कः ॥ य

त्रिकस्यानयमाधयविहस्यत्वं॥पूजकस्यवयवतत्त्व॥उरुनलद्वयधिकस्यदयत्वं॥विहकवविहस्यत्वं॥ल
क्षुभोला॥प्रदानवयवत्वं॥विहस्यनाधनेःस
न॥तद्वान्यन॥संकलितमाधनःसमिका
शुचितमकलिकंवीवत्रमृताप्रतिदिशयत्रिय
तत्त्वानयवकंअदयन॥नाधकवकायांसंय
न॥न॥जालगीयन॥सनिष्ठन॥जसंयकोदाना
निःसहायस्ययनयाद्वीरुयस्यन॥यनीमृजीया॥यनरायनस्तुननरायनया॥प्रदीपी॥मनस्यस्येष्टुः

अनाभकमसिन्नसाधवनेकं॥ नादं रात्रादृष्टमन्यादयम्॥ उच्छादिनेः सर्मिकः॥ यवानवीवत्रस्यलूनपंडकनामादि॥ दि
वृटनमाकाठनस्या॥ उच्छादिनेकमर्धनोः स
सस्यवाकुककत्यस्यस्यस्यस्यनव॥ यथक
सीसनासा नो॥ धमलनथाभ्या॥ दानयराः
स्यनमिनिक्कल्ल॥ नविधमानधर्माथस्य
धमाजाल्मशऊनस्य॥ नगकत्रवायस्यका
यकार्क॥ निनमशुकं स्यययम्॥ नादकदायिनदलरम्॥ कनम्न्यां स्योस्तेदयाम्॥ उदकाथीचककार्क॥ समानः माल

जिकः॥ स्वीकृतावनास्या॥ गम्यमायां नयनी॥ अर्द्धतयन
थविन॥ याकृकगाअस्यदृष्टतां॥ जनयसिन्ननास्या॥ जयस
स्वामित्वां विभाअवेयायुस्यकत्रस्यस्वामीत्वाथ्यपगमनमधि
यादन्यत्रविः॥ नदुत्रलस्वामिनाअसिः॥ केत्यागकाव
यपिहगुहदी॥ यथदनस्यवाचनान्॥ उयस्यययदम्याथीस
उदकाथीचककार्क॥ समानः माल

[illegible][illegible]

शुविस्त्रयागुदीनासुनः॥उरुनशाया
निष्कली॥सन्मनावमलयकः॥लयनिः
सुगः॥उरुनशाया॥सिधुननमसा॥साक
करी॥सम्भनन॥रुमस्यकात्रिष्यमाहनाया
याजवात्रयानियुक्ता॥सिःसुकासुकानिया
थमनुष्ठानी॥वाचनयकमम्यनामन॥सु
गुहानैनि॥यथागुर्न॥नवागुर्न॥आयावनगुदीरस्याकविमन॥अदानैद्वयावधोनारुवसा॥अत्याचनानाधि

वाहवायव॥आदावमसगाववृद्धियाजयासग॥इकर्म॥मोर्तचअ
कात्रि॥मलवेयी॥यनिवरुननष्टाचुर्नन॥सधस्यनि
लमनसा॥ययववकक॥ययववसातेदान॥वाचननिः
ननावाचनसधसामयीवलाया॥एकदमाचुवाकउनहन ३२
गतिगुदीलासधमल्लवावमत्रिनवाभिनि॥सनिषोदा
विनययुर्नमचयत्रिमधुतयनिशागकर्मनवेदाकाकसि

वर्गानि॥ भर्गो मूर्ध्नि मय नमः॥ स काष्ठयुग्मि॥ नमः यथा गस्तु यथा निमोदनं धावनीं वज्रनीसकः॥ स त्वाङ्गु
यलयः॥ यद्यपि ननु यथा नमो नमो॥ वन
दना नमो॥ एक यत्ना नमो दानं नमो विद्वा
यथा तमभासं यावत् काययोगः॥ धात्रयदु
भयध्वज नय ह्यप्यविहसंजन नार्थं ला
कुवेलाय नमो॥ वातुक या तममयनवा॥ धा
मस्य वननी॥ संगृह्ये वक्तु॥ सज्जक भयपूर्वस्य॥ उरु नमः भक्तु गुरुनिकाया॥ धात्रयमस्य॥ कश्चि कयामुनमः

भाकाथानुदक माङ्गस्य॥ काष्ठप्रवशः॥ प्रयाक वपुः
दिना स्नानं॥ सना पानि निकाया नक धाना वदक दययि
याङ्गं॥ दन यद्यपि स्यात्तु रुका मो भवस्तु यो कार्य मा
दक रुक सिद्धं तु स्यात्तु॥ सना थंज तस्या स्रु नमः॥ यनि
वीन या जस्य वा॥ मृक जमया नमः नमः॥ निदं तु यस्या
वीन या जस्य वा॥ मृक जमया नमः नमः॥ निदं तु यस्या

जनदानकसहयविष्णवर्णशायययशान
 दक्षनाजियुक्तवदन्विद्वन्॥नरकस्य
 मकनर्कभावनयदकवा॥आरुतायाक
 ॥नाननविना॥जनययवाविकाचन
 वा॥कार्यकावर्णसिखमसिख॥नस्मा
 कार्याविमकीदानायुनिष्ठनसंछयन॥
 स्थेनस्त्री॥नैयुमीत्यंगनस्यसूत्रनद्वेत्वा

ननवर्ण॥अननमसा॥मृदस्वस्त्यावा॥कमुकस्यन
वृणाथकत्व॥यविश्रवधमयस्वययन॥वककध
लिकजलस्यसमवस्त्रायकुकनकुशिकास्वाभनद
न॥नमानकवधसाद॥नकयस्वने॥यस्वयन॥कमयि
केलेवेमजदानयनिहाननन॥नेनजनयदवात्रि
नाविद्यानकदकनमकविधुनिका॥कानयक्य
॥नेकनानकस्यनलेद्वद्वामपहिनामचा॥

नाविद्या न कृत्वा भीषा न सः॥ काममनसः गच्छन्त्या मनोऽपि नानुसन्त्या न सः॥ सः सः दः
धुदशादका न न नया क नः॥ वामस्य यनि
या कृत्वा नः॥ निष्कस्य त्वयु स्य वक्र न मनज
गां कृत्वा नः॥ निष्कस्य त्वयु स्य वक्र न मनज
गां कृत्वा नः॥ निष्कस्य त्वयु स्य वक्र न मनज
गां कृत्वा नः॥ निष्कस्य त्वयु स्य वक्र न मनज
गां कृत्वा नः॥ निष्कस्य त्वयु स्य वक्र न मनज
गां कृत्वा नः॥ निष्कस्य त्वयु स्य वक्र न मनज

नः॥ यः स्य वक्रि गत्वा॥ चक्रवा शुद्ध त्वमद का स्य शुद्धिः॥
सः॥ यियत्त त्वं स्य दस्य॥ नागि क्रिया सखा मज चिन
का नीद ज नैः कृत्वा॥ नै ना म कृत्वा कृत्वा स्या कि न
नृक जल ना स्य युक्ता दनं॥ यजे न व भविद लि का ना
कृत्वा॥ आद्य कृति वा क य न म्वा वा द दधि दिग्ग॥ नवान
वाहन स्य वंधा यत्न॥ का च्छटा ण कृत्वा उग्र म्वा द ल न य थ नि धु नि व नै द न॥ अष्टि गा व ऊ य य फ नः

[illegible][illegible]

कात्रिका मन्त्राव्ययत्रयम् ॥ उयस्यययन्यानीयात्रराहुं ॥ राहुगयकस्यगदगु ॥ साधिकं व्यायान ॥ नागदा
नयदनेशा नो कर्तव्ये ॥ दानं गृहिनेयापि
प्रदायात्तस्य नाकना ॥ नवस्यसिद्धवेनिर्दः
मुरात्रिकशास्त्रिकय ॥ उयस्ययन्यानीय
क्रिययशिमविद्यात्रस्ययास्त्रस्यनन ॥
कवाटकटकद न ॥ वंमस्यवयत्रिभुव
वा ॥ आधनकय ॥ वीक्यानीयराहुमायात्रिसामिकाधनक्या नू ॥ गुवि ॥ योनियवयय ॥ नाकलिकवग

इव त्रेक्षन् यत् ॥ कालन कालमदक र्णुनाम रुभवनं ॥ गङ्गी वा ॥ मृगी नृकुचकन जुवेरुर्दुर्कनेरु कनवा
यस्यामय निवद्वन ॥ नाना नक्षत्राणि
निष्ठायक नगीया नामदक वाया ॥ स
वा ॥ मलिया ॥ सीय संथा ॥ गृदि ह्य ॥ अ
नक र्णुनिषदन ॥ संराजन निषदन
दक्षु नस्या सर्वप्रमवरुत्वा ॥ अवधन वः
ऊह्य ॥ शिनेत्तु गृहीतवत्या ॥ संराजनं स्तन ॥ नियः यवष स्यात् ॥ उरु अस्तु नियव यव नानक ॥

शायदहस्य ॥ अथ ने च ॥ नया विद्या गोथमसुद्वेन ॥
याभक जत सर्वत्वं रुद्रकादिगर्ग ॥ वृत्त ॥ यवु केवेन मर्या
नस्तु नताया ॥ याभत्वे जनिना त्वेन संयुक्त ॥ यत्
॥ स्तान नद ॥ स्तन ॥ साव न गस्या ॥ नव रुद्रयवभन ॥
स्ताना नद ॥ अथ वना काल ॥ स्तान न ॥ अस्तु रुद्रयवभन ॥

ॐ

अनिर्दलिभयवृद्धि नम्याचलस्य॥ कायकायसंवद्धवा॥ स्वादनीयराजनीयथा॥ कल्पिकथा॥ स्वस्थनस्यव॥
उसुखयायकादृष्टिगतादिवचनाथना॥ स्वयंदात॥ अकल्पिकथादृष्टिगता॥ दायन॥ सर्वविशलावा॥
अचलदानं॥ युद्धारिननिक्षिप्तनादलना॥ धनया॥ उसुखबाजदवीकृमावासास्यरटवलागने
गमजानयदाकिं॥ अकृत्रायाययागवध
नादलनं॥ विनामगलुवागिनिवद्धयय
वास॥ यद्धाभनाकरुत्वा॥ अकृत्रायवध
तस्य॥ दुष्कृत्तस्यययको॥ असुखीकृतानामरयययि॥ दुष्कृत्तस्यवा॥ सुखिद्वयधनयसुखयदलनाथमय

विवा ना कानिक भद्रि विनि मोलानि ॥ नून त्व मनश्च न त्व ॥ नद ह्य ध्व क कूठ नाव क वरु क म्नी य न ष
यद्वादि क र्या न ॥ का न य लि ना क न वा ॥ य ॥ क न ष वि रु न या ॥ का य न
त्रि ॥ मृष्टि स न्व र्थ न क न वि द न न ॥ य ॥ य म्भु स ष य ल नि का रि ॥ य द्वा गो ॥ रि का ॥ य न म्भ ॥
उरु वे ष व शि य ॥ मृ को ॥ य नि नि या र्थ ॥ जू नि या म द्वा क न ॥ न य न्द र्थ न य न्द न न ॥ न स
श्रु य दान द या न ॥ न रि को र म्भ वि क न्द
न ॥ या ना जि क र्म या व र्ण ष थ न्द क म्भ
भर्ता य नि क्का य न ॥ म्भ क्क सा न्द क्क ॥ पा म्भ क्क न ॥ म्भ न्द सा म्भ व र्द ॥ म्भ व र्द य नि क्का य न ॥ स वि द्वा म्भ क्क

उरु

नामयुनिजिजाथगीगुदिगाहकेरुकरुदसुकात्र॥॥रुकरुदकात्र॥॥नर्मिन्मृगन॥॥भस्त्रधर्मसंयः
मवृज्जवात्रिभधर्मकनक्षथाथगायुक्त
कीजया॥चत्रयन्यावकसुस्थलावनेका
न्यवभतासुस्थसु॥स्वयंनिशागमादा॥
निकर्षभर्मत्रसमावर्कननिकर्षलघु॥
दुरु॥रिक्तधधकर्मलिदुनुस्यमनयान
योलाकवसुववत्रकदलभयी॥मृज्जवात्रिभधर्मकनक्षथाथगायुक्त

यात्रनर्मकनक्षधर्मसमयाधिसुन॥अधिमिष्टुर्धर्म॥
दिकनभरुध॥अग्निना॥अनधिष्ठितसमयस्य॥अग्नाः
पुष्टलननिर्वायनेसुस्थसुननसमवधनयुक्त
अत्रस्यकनक्षीयत्रासुस्थधिसुनमवाधिसुन॥अग्नि
स्यसुस्थसुनधधर्मावावि॥कनक्षसुस्थसुन॥॥नाचकसु
यायधिसुनकनक्षधर्मकनक्षथाथगायुक्त॥अत्रलघुमनियव

नामा रउम स्या ॥ ७ ॥ त्वत्कनिः ॥ ७ ॥ यत्कनिः ॥ ७ ॥ यत्कनिः ॥ ७ ॥
हमीय स्या नागो स्व ॥ ७ ॥ अन्तः ॥ ७ ॥ यागुत्तमः ॥
कश्चिन्निवसि ॥ ७ ॥ कश्चिन्निवसि ॥ ७ ॥ कश्चिन्निवसि ॥ ७ ॥
उत्तमः ॥ ७ ॥ सन्निवसि ॥ ७ ॥ सन्निवसि ॥ ७ ॥ सन्निवसि ॥ ७ ॥
विमोका लया ॥ ७ ॥ विमोका लया ॥ ७ ॥ विमोका लया ॥ ७ ॥
७ ॥ ७ ॥ अन्तः ॥ ७ ॥ अन्तः ॥ ७ ॥ अन्तः ॥ ७ ॥
नमस्ते नमः ॥ ७ ॥ नमस्ते नमः ॥ ७ ॥ नमस्ते नमः ॥ ७ ॥

नामा रउम स्या ॥ ७ ॥ त्वत्कनिः ॥ ७ ॥ यत्कनिः ॥ ७ ॥ यत्कनिः ॥ ७ ॥
हमीय स्या नागो स्व ॥ ७ ॥ अन्तः ॥ ७ ॥ यागुत्तमः ॥
कश्चिन्निवसि ॥ ७ ॥ कश्चिन्निवसि ॥ ७ ॥ कश्चिन्निवसि ॥ ७ ॥
उत्तमः ॥ ७ ॥ सन्निवसि ॥ ७ ॥ सन्निवसि ॥ ७ ॥ सन्निवसि ॥ ७ ॥
विमोका लया ॥ ७ ॥ विमोका लया ॥ ७ ॥ विमोका लया ॥ ७ ॥
७ ॥ ७ ॥ अन्तः ॥ ७ ॥ अन्तः ॥ ७ ॥ अन्तः ॥ ७ ॥
नमस्ते नमः ॥ ७ ॥ नमस्ते नमः ॥ ७ ॥ नमस्ते नमः ॥ ७ ॥

यि॥ अयमस्य नृसदस्य प्र॥ ॥ नथादंरुगवनाधमधमिगमाजानामियथमार्थजानमयिकोधमोउकांरु
 मवनागयमिभयमानानात्मनकनायाथ
 यरुयनन॥ इष्टुगमानुसम॥ ॥ वृत् ॥ नथा
 न॥ यत्रियुक्तनिकाया॥ सत्रियुक्तया॥ अ
 वसराग॥ उयसुनमीकृ॥ नो॥ अम॥ वस
 नाइविवचनगगनाथन॥ उम॥ इयान
 त्राभयय॥ ॥ इयिचउथसगकेमभरुनियर्वजालवजनाभनीयस्यगुरुययसंकमरुयि॥ कनानि॥ सुज

५८
दमवर्नययायक रेंदुष्टिगर्गयथमाकमवावनाकृतादि नीथमिथमियथनदकमुष्टिरिकभाधवथय॥ नात्रगा
वृष्टुर्नकय॥ नासिनगायाधमलादिगस्थ
स्यस्ववासुमे॥ अकृगः यावुवधकसुवि
निकायान्नीयस्ययूनः कस्यनीयत्व॥ नाः
निकस्य॥ रज्जगविसात्रास्यकवयुनिस्यदि
स्य॥ मदायकेशिकृष्णमणवे॥ एकलवृष्टा
यत्रगः यावृस्यवृकस्यर॥ अनाकाभदयनिमकिनः युग्मकाभननधमोष्टिबदभायनासुनानिस्यनामनः

॥ नासिनसंगद॥ नात्यागविकभवकुलनस्यनयत्रक
कायावयवकायवन्नानायावन्नभाधयविसाग॥ न
ष्टिनस्यगृदिग॥ नमदात्रभंनकायावृमिरज्जग॥ नम
गस्यकायायग॥ साधनगंलमधनिसाविनयावन्नगः
कायावस्ययावस्यरावन्नमयनिदानं॥ नानवष्टिन्नम